बालमुकुंद सिंह : हमारी प्रेरणाओं के पिता और सफलताओं प्रतीक पुरुष

(अवसर विशेष पर ख़ास संस्मरण पर हमारे चेयरमैन कुमार योगेंद्र नारायण सिंह द्वारा)

हम सीतयोग इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में स्व बालमुकुंद सिंह की प्रतिमा स्थापित करके काफी गौरवान्वित हैं क्योंकि आप सीतयोग परिवार की तमाम प्रेरणाओं और सफलताओं के प्रतीक पुरुष हैं।

प्रतिमा स्थापना के इस अवसर पर स्व बालमुकुंद सिंह (बाबूजी) की परिचयात्मक गाथा सबके समक्ष रख रहा हूँ --

-- हमारे पूर्वज--

सबसे पहले अपने पूर्वजों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत कराना चाहूंगा। मेरे पूर्वजों की छठी पीढ़ी बिहार के पुराने शाहाबाद जिले (अब भोजपुर) के हसनबाजार के पास सहेजनी गाांव से संबद्ध है। इस गांव से ही हमारे पूर्वज स्व बेला राय किसी जमाने में औरंगाबाद जिले के प्रसिद्ध गांव पोईंवा के पास पोखराहा ग्राम में आकर बसे थे। उनके बाद की पीढ़ियों में क्रमशः उनके सुपुत्र स्व जीत सिंह,उनके सुपुत्र स्व वंशी सिंह,उनके सुपुत्र स्व महादेव सिंह और उनके सुपुत्र स्व देवकरण सिंह हुए जिनका विवाह ओबरा प्रखंड के डिहरा गांव में हुआ और उनके सुपुत्र स्व बालमुकुंद सिंह यहाँ (डिहरा में) अपनी दादी की पैतृक सम्पत्ति के उत्तराधिकारी के रुप में स्थाई निवासी बने।

-- पुश्तैनी गांव ---

हम औरंगाबाद जिले के ओबरा प्रखंड के डिहरा गांव के निवासी हैं। यह गांव सोन नहर के तट पर स्थित है,कृषि प्रधान है। इस गांव में कई स्वतंत्रता सेनानी हुए जिनपर ब्रिटिश काल में "शूट एंड साइट" का ख़ास आदेश था। उनमें ही एक थे स्व बालमुकुंद सिंह के चाचा स्वर्गीय राम प्रताप सिंह। यह गांव एक समय "जयंती ग्राम" के रूप में भी घोषित किया गया था जो स्वतंत्रता सेनानियों के गांव को सम्मान की दिशा में चला था.डिहरा एक विशाल गांव है जहां जाति धर्म की विविधता के साथ करीब २ हजार घरों की आबादी है और यहां भाईचारगी का सफल समन्वय है।

क्षेत्रफल के हिसाब से बताऊं तो दक्षिण से उत्तर तक डेढ़ किलोमीटर और पश्चिम से पूर्व तक आधा किलोमटर में यह गांव फैला हुआ है. यहां स्कूल,अस्पताल ,पशु अस्पताल, बैंक जैसी मौलिक सुविधाएं हैं. इस गांव का अपना एक छोटा बाजार भी है. इसी गांव में हमारे पिता और हमसबके प्रेरणा पुरुष स्व बालमुकुंद सिंह एक साधारण परिवार में जन्मे। कुशाग्र बुद्धि और आगे पढ़ने बढने की अभिलाषा इनमें बचपन से ही थी. आपको उस जमाने में भी एस्कॉलरशिप मिलता था जो कि कम ही लोगों को ही मिलता था। स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह, ग्राम कचहरी कानून के निर्माण से पूर्व ही पंचायती राज व्यवस्था अपने गांव में कायम कर चुके थे और उसके मानद सरपंच थे। इतना ही नहीं आप 15 दिनों पर स्थानीय युवकों के सहयोग से गांव और पंचायत भर की सफाई भी करते कराते थे और जब गांव

में चापाकल नहीं था तो आप गांव के कुओं की सफाई भी कराते थे, ब्लीचिंग पाउडर तक उस जमाने में डलवाते थे. उस गांव में कई शिक्षाविद हुए जिसमें एक स्वर्गीय डॉ राम परीखा सिंह की चर्चा करना जरुर चाहूंगा जो आजादी के समय मेडिकल के छात्र होते हुए भी टेलीफोन काटो अभियान के आरोप में चर्चित रहे और ब्रिटिश शासन उनकी तलाश करती रह गई थी।

इस गांव में दर्जनों इंजीनियर,अधिवक्ता और गैर सरकारी, सरकारी कामों से जुड़े हुए लोग रहते आये हैं और उन्हीं में से एक हमारा परिवार भी है.

--पारिवारिकता --

डॉ राजेश कुमार सिंह अपने पूर्वजों की गरिमामयी कड़ी में आज अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। राजेश मेरे (कुमार योगेंद्र नारायण सिंह के) द्वितीय पुत्र हैं और मेरे प्रथम पुत्र राकेश कुमार सिंह भी एक कुशल इंजीनियर हैं जिनकी अपनी एक कंपनी है. मेरे कनिष्ठ पुत्र रंजन कुमार सिंह बैंकिंग सेवा में बंगलोर में चीफ मैनेजर है।
1951 के करीब औरंगाबाद शहर के नावाडीह मोहल्ला में स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह ने अपना घर बना कर यहीं से अपने 4 बच्चों की पढ़ाई लिखाई कराई और इन्होंने अपने पुरुषार्थ से डिहरा गांव और औरंगाबाद शहर में भू-संपदा अर्जित की जो अभी बहुमूल्य है. स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह के जीवन का उद्देश्य था कि हमारे बच्चे खेतिहर नहीं बल्कि पढ़ लिख कर बेहतर सामाजिक जीवन जीयें। जमीदारी उन्मूलन के समय बगल के काडा गांव के नवाब ने उन्हें आदर सहित बुलाया था और प्रस्ताव दिया था कि बालमुकुंद बाबू ,आप जितना भी जमीन चाहते हो बिना पैसे का हम से बंदोबस्ती ले लो, पर बाबूजी ने यह कहते हुए इनकार कर दिया था कि- हुजूर ना मुझे खेती करनी है न खेती करवानी है, बल्कि पढ़ना लिखना और सभ्य नागरिक खुद बनना भी है और नई पीढ़ी को बनाना भी है. मेरी माताजी स्वर्गीय श्रीमती दुलारी देवी मेरे बाल्यकाल में ही स्वर्गवासी हो गई थी जब मैं 2 वर्ष का था। उसी समय से स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह ने हमसभी सभी पुत्रों का मातृस्वरुप में भी पालन पोषण की ममतामयी जवाबदेही पूरी की।

स्व बालमुकुंद सिंह जी के 4 सुपुत्र एवं एक सुपुत्री स्वर्गीय सावित्री देवी रही हैं और आपके चार पुत्र क्रमशः कुमार वीरेंद्र नारायण सिंह पूर्व रेलवे के टीटी से रिटायर होकर धनबाद में निवास करते हैं और दूसरे कुमार सुरेंद्र नारायण सिंह जो बीए,बीएल थे पूर्व रेलवे में गार्ड के पद पर आजीवन मुगलसराय में कार्यरत रहे. आपके तीसरे सुपुत्र कुमार नरेंद्र नारायण सिंह एक प्रसिद्ध पशु चिकित्सक के रूप में और जिला पशुपालन पदाधिकारी के पद से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं और सम्प्रति पटना के पटेल नगर कॉलोनी में परिवार के साथ रह रहे हैं। चतुर्थ सुपुत्र यानि मैं कुमार योगेंद्र नारायण सिंह वरिष्ठ अधिवक्ता और पूर्व सहायक लोक अभियोजक सहित वर्तमान में विशेष लोक अभियोजक मद्य निषेध के रूप में औरंगाबाद व्यवहार न्यायालय में सम्मानित कार्य से परिचय रखता हूँ और एसआईटी का चेयरमैन हूँ।

--सामाजिकता --

स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह की सोच बराबर समाज सेवा के प्रति रही । 1951 में जब औरंगाबाद के नावाडीह के अंतिम छोरपर इन्होंने जब घर बनाया तो वहां कोई सुविधा नहीं होती थी। आप अपने और स्थानीय बच्चों के श्रमदान से सड़क की मरम्मत कराया करते थे साथ-साथ मोहल्ले के अन्य

लोग भी सड़क निर्माण में हमेशा आपका सहयोग करते थे.नावाडीह मोहल्ले के गरीब और महा दलित समाज के लोगों के साथ भी आप सामाजिक जुड़ाव रखते थे। उस समय इन लोगों के वास्ते सरकार की उचित व्यवस्था नहीं होती थी तब आप उन लोगों के लिए भी जिले के पदाधिकारियों से मौलिक सुविधाओं की बहाली कराने की मांग करते रहते थे.आपके द्वारा ही नवाडीह मोहल्ले के महादलित टोला में जलापूर्ति व्यवस्था एक जमाने में कराई गई थी ।

--क़ानूनी जानकार --

उस समय औरंगाबाद के एकमात्र रेलवे अधिवक्ता श्री अंबिका प्रसाद सिन्हा थे जो उस जमाने के एक नामी वकील थे आप उनके लिपिक हुआ करते थे. तब लोगों को पता था कि बालमुकुंद बाबू दीवानी और फौजदारी मुकदमे के बारे में एक बेहतर समझ रखते हैं और यही कारण था कि औरंगाबाद कोर्ट के सभी अधिवक्तागण इनके लिखे हुए मौजमून को सम्मान और तवज्जो देते थे। कहते थे जब उनका लिखा है तो कहना ही क्या है ? यहां के दीवानी मामलों के प्रसिद्ध अधिवक्ता प्रियव्रत नारायण सिंह,कमला प्रसाद सिन्हा,हबीबुर्रहमान जैसे लोग बालमुकुंद बाबू के लिखने की पकड़ की हमेशा तारीफ करते थे ।

--दूरदर्शी सोच --

हमारे स्वर्गीय पिताजी का एक ख़ास सपना था कि उनके पुत्र और पौत्र मिलकर एक ऐसे शिक्षण संस्थान स्थापित करें जो इस पिछड़े इलाके के लोगों को भी तकनीकी शिक्षा प्राप्त कराये।
उन्होंने मुझे और तीनों पुत्रों को बराबर इस काम के लिए प्रोत्साहित किया था कि एक तकनीकी शैक्षणिक संस्थान का निर्माण आप सभी लोग जरूर करें जिससे समाज के दबे लोगों को भी तकनीकी शिक्षा का लाभ स्थानीय स्तर पर ही मिल सके ।

--स्वप्न हुआ साकार --

आज के संस्थान के सचिव डॉ राजेश कुमार सिंह के मन मानस से यह बात बराबर बैठी हुई थी कि वह कैसे कोई तकनीकी शैक्षणिक संस्थान खोलें। डॉ राजेश कुमार सिंह ने बी टेक करने के बाद नेस कंपनी में मुंबई में काम किया और बाद में उन्हें किसी के अधीन रहना पसंद नहीं आया और तब इन्होंने नौकरी छोड़ मुंबई में ही अपनी उत्पादक कम्पनी बनाई जहां अभी 200 इंजीनियर और कर्मी कार्यरत हैं। डॉ राजेश कुमार सिंह ने अंततोगत्वा 2010 में अपने सपने को तब पूरा किया जब वे पक्षघात की बीमारी के बाद एम्स के डॉक्टरों की सलाह से रेस्ट में रहा करते थे. उसी दौरान राजेश जी के मन में अपने स्वर्गीय बाबा बालमुकुंद सिंह की बातें याद आई और
इन्होंने उस रेस्ट पीरियड के दौरान ही मुंबई में संकल्प लिया कि वे अपने स्वर्गीय बाबा की इच्छा पूर्ति करने के लिए औरंगाबाद में इंजीनियरिंग कॉलेज का निर्माण करेंगे और राजेश जी ने बिना किसी के मशविरा किए नीतीश कुमार के कार्यकाल में अपने सपने को साकार कर दिखाया।

--सरकार का भी था सपना --

सपने को साकार करने के पीछे भी एक दूरदर्शी कहानी है जिसमे खास यह कि वर्ष 2010 में मुंबई में तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहारी उद्यमियों का एक सम्मेलन किया था और कहा था कि आप सभी गृह राज्य को लौटे और उद्योग धंधा करने में लगे. मैं आप सभी लोगों को पूर्ण सहयोग करूंगा। उसी के प्रतिफल में डॉक्टर राजेश कुमार सिंह ने तुरंत ही पटना आकर बियाडा कार्यालय को अपने संस्थान के लिए 10 एकड़ भूमि आवटित करने का आवेदन दिया और मुख्यमंत्री के वादे के

अनुसार बियाड़ा ने इस संस्था स्थापना के लिए 10 एकड़ जमीन आवंटित कर दिया और सपना साकार हो गया सरकार का,स्व बालमुकंद सिंह जी का और हमारा भी ।

--संस्थापक सदस्यों की यादगार भूमिका—

सीतयोग शब्द की परिकल्पना 1988 में संस्थान के संस्थापक सदस्य ई राकेश कुमार सिंह द्वारा की गई है जो मेरे (कुमार योगेंद्र नारायण सिंह के) प्रथम सुपुत्र हैं। इनका संस्थान के प्रति उच्च अभिभावकत्व रहा है और इन्होंने AICTE से संस्थान को मान्यता दिलाने में सफलता अपने विशेष परिश्रम से हासिल किया। मेरे (कुमार योगेंद्र नारायण सिंह के) तृतीय सुपुत्र रंजन सिंह का भी इस संस्थान को साकार करने में महती भूमिका रही है जिन्होंने बैंकिंग सेवा में होते हुए भी अपना बहुमूल्य समय और कठिन परिश्रम का योगदान किया है ।इन्होने संस्थान के लिए अथक परिश्रम किया और सफलता हासिल की ।

-- संरक्षकों की कृपादृष्टि -

अंत में सीतयोग इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के संरक्षक मंडल की अति विशेष भूमिका भी सदा स्मरणीय है जिसमे नागालैंड के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार,पटना उच्च न्यायालय के दो चर्चित और विद्वान अधिवक्ता स्व राजेंद्र प्रसाद सिंह और स्व अभय कुमार सिंह मुख्य हैं ।

नागालैंड के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार सदैव इस संस्थान की उन्नति के लिए तत्पर रहते हैं और औरंगाबाद से अन्यत्र इस संस्थान की चर्चा लोगों के बीच करते रहते हैं।

हम अपने संस्था के सभी शुभेच्छुओं और संरक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

---- सम्मान को स्थायित्व ---

बताते चलें कि सीतयोग इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी का निर्माण कार्य वर्ष 2010 के जेठ महीने से शुरु हुआ तब यह परिसर जो बियाड़ा भूमि रही है काफी जटिल,बंजर स्थिति में थी और अगल बगल में कुछ भी नहीं होता था बस छोटे-छोटे उद्योग,अजान मील और खानपान के होटल सड़क पर चलते थे. बस यहां सूर्य बिहार के नामक एक छोटा सा पर्यटन विभाग का होटल था और बाकी सब कुछ सुना सन्नाटा। इसी उजड़े चमन से हालात के बीच स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह की प्रेरणा और उनके संघर्षो से हासिल हमारी व्यावहारिक शिक्षा का परिणाम यह रहा कि हमने आज अपनी बहुआयामी और बहुमंजिले संस्थान को सफलतापूर्वक स्थापित और संचालित कर दिखाया है और यह जगह एक खिलखिलाता चमन बन गया है।

आज जिस भूखंड पर यह संस्थान अवस्थित है वहाँ चेयरमैन एवं सचिव की यह संयुक्त भावना लगातार बनी रही थी कि,अपने प्रेरणास्रोत,पिता और पितामह स्वर्गीय बालमुकुंद सिंह जी की आदमकद संगमरमर की प्रतिमा स्थापित की जाए ताकि वे परिसर में भावनात्मक रुप से सर्वदा उपस्थित रहें और अपने परिवार और संस्था को हर पल अपना आशीर्वाद देते रहें।

हम सभी आज अपने प्रेरणा पुरुष की उपस्थिति से अपार हर्ष और विशेष संतुष्टि की सामूहिक अनुभूति कर रहे हैं।

कर्मठता के पुजारी : कुमार योगेंद्र नारायण सिंह

1972 में मैं जब क्लब रोड, औरंगाबाद स्थित पुण्यश्लोक अधिवक्ता रामकेवल सिंह के यहां उनके भतीजा, भतीजी, नाती और नतिनी को ट्यूशन पढ़ाने जाया करता था तब उन दिनों अक्सर वकील साहब से मिलने के लिए एक सीधे–साधे बुजुर्ग आया करते थे। मैं स्वभाववश उन्हें बाबा कहकर संबोधित करता था और उनको सादर प्रणाम किया करता था। वे भी मुझे खूब आशीर्वाद दिया करते थे। उनका नाम आदरणीय बालमुकुंद सिंह जी था। जब रामकेवल बाबू नहीं रहे और उनके बच्चों की पढ़ाई भी समाप्त हो गई तब बालमुकुंद बाबू को प्रणाम करने के लिए यदा–कदा उनके घर पर ही जाने लगा। वहीं जाकर मैं उनके कनिष्ठ सुपुत्र और आज के औरंगाबाद न्यायालय में सेवा दे रहे वरीय अधिवक्ता कुमार योगेंद्र नारायण जी से पूर्ण परिचित हुआ और मैंने उन्हें चाचा कह कर पुकारना शुरू कर दिया। एक बार 25 जुलाई 2002 को जब मैं वाराणसी में मनिकर्णिका घाट पर घूमने गया था तब वहां योगेन्द्र बाबू और उनके परिवार के सदस्यों को देखा। उनसे पता चला कि उनके पिताश्री बालमुकुंद बाबू गोलोकवासी हो गए हैं और उनके पार्थिव शरीर को वहां अंत्येष्टि के लिए लाया गया है। मैं भी धन्य–धन्य हो गया क्योंकि अंतिम क्षण में भी मुझे बालमुकुंद बाबा को प्रणाम करने का अवसर अचानक ही प्राप्त हो गया था। इस घटना के बाद योगेंद्र बाबू ने मुझे और भी अधिक प्रेम देना प्रारंभ कर दिया जो आज तक बरकरार है।

कुमार योगेंद्र नारायण सिंह वरीय अधिवक्ता सह चेयरमैन सीतयोग इंजीनियरिंग कॉलेज, औरंगाबाद का जन्म लख–डिहरा, ओबरा में 25 अक्टूबर 1946 तदनुसार विक्रम संवत् 2003 के कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा को पुण्यश्लोक बालमुकुंद सिंह जी के चतुर्थ सुपुत्र के रूप में हुआ था। आपके अग्रज क्रमशः वीरेंद्र नारायण सिंह, कुमार सुरेंद्र नारायण सिंह और डॉक्टर नरेंद्र नारायण सिंह हैं। वीरेंद्र नारायण सिंह रेल विभाग में टीटीई तथा कुमार सुरेंद्र नारायण सिंह रेल विभाग में ही स्टेशन मास्टर के पद

पर आसीन रहे। डॉक्टर नरेंद्र नारायण सिंह चिकित्सक हैं। आपको 2 वर्ष की आयु में ही मातृ सुख से वंचित होना पड़ा। दादी का सुख तो एक पल भी मिला ही नहीं। हां, आपकी परदादी आप लोगों के पालन पोषण के लिए जरूर जीवित रहीं। आप गांव के ही प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते थे और विद्यालय के गुरुजी देवलाल दुबे आप ही के यहां रह कर आपलोग को पढ़ाते भी थे और स्वयं भोजन भी पका लिया करते थे। आप बचपन में कुछ शरारती किस्म के थे। एक दिन आपने अपने बड़े भाई नरेंद्र नारायण सिंह जी को न तो विद्यालय जाने दिया और न स्वयं ही गए। उन दिनों की व्यवस्था के अनुसार जब गुरु जी ने आपलोग को पकड़कर लाने के लिए कुछ छात्रों को भेजा तो पहले तो आपने दरवाजा खोला ही नहीं और परदादी के कहने पर जब खोले भी तो हाथ में तलवार लेकर प्रहार करने के लिए ही निकल पड़े। गुरु जी ने आपके हाथों से तलवार छीन ली और आपको विद्यालय में जाकर उन दिनों के विद्यालयीय दंड व्यवस्था के अनुसार आपके हाथ पैर बांधकर आपकी जमकर पिटाई की जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो गए। इस पर आपकी परदादी और आपके घर की दाई सुमेसरी ने गुरुजी को खूब भला बुरा कहा।

इस घटना के बाद आप पढ़ने के लिए औरंगाबाद आ गए और अपने पिताजी के साथ नावाडीह में रहने लगे। आपके पिताजी का जन्म 1903 ईस्वी में हुआ था और लगभग 99 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया। परंतु वे अत्यंत ही अग्रसोची और अंतर्दृष्टि रखने वाले थे। जमींदारी प्रथा की समाप्ति के समय जब कारा के नवाब ने उन्हें जमीन देने की पेशकश की तो उन्होंने मना कर दिया क्योंकि वे बच्चों को पढ़ा–लिखाकर बड़ा बनाना चाहते थे और खेतीबारी से दूर रखना चाहते थे। उन्हीं की इच्छा के अनुसार उनके चारों पुत्रों ने शिक्षा प्राप्त कर उच्च पद प्राप्त किया। आप सर्वाधिक आश्चर्यचकित 1953 –54 में अपने मित्रों के साथ तब हुए थे जिस दिन औरंगाबाद में पहली बार बिजली आई थी और सड़कों पर प्रकाशित बल्ब लटक रहे थे। आप अपने मित्रों के साथ चिल्ला पड़े कि इसमें तो सुई भी नजर आ जा रही है। उस दिन के आयोजित कार्यक्रम में परम पूज्य अनुग्रह नारायण बाबू भी औरंगाबाद आए थे।

कुमार योगेंद्र नारायण सिंह की प्राथमिक शिक्षा संस्कृत उच्च विद्यालय के बगल में उन दिनों चल रहे सरकारी प्राथमिक विद्यालय में हुई जो उन दिनों धनेश्वर गुरुजी के स्कूल के नाम से विख्यात था। आपने मध्य विद्यालय की शिक्षा अनुग्रह मध्य विद्यालय, औरंगाबाद से पाई। यहां पर भी एक अवसर पर आपने अपनी शरारत का परिचय दिया था। तत्कालीन विद्यालय प्रधान महेश नारायण सिंह छठे वर्ग का वर्ग कक्ष बनवा

रहे थे और छात्रों से हस्तकला विषय के अधीन उसमें बगल में स्थित आहर से मिट्टी भरवाने का काम करवा रहे थे। आपने इसका विरोध किया क्योंकि आपके अनुसार छात्र का काम मिट्टी भरना नहीं था। उनकी डांट और फिर उनके द्वारा समझाए जाने पर आपने इसे स्वीकार कर लिया। अब तो आप हस्तकला के विभिन्न आयामों यथा बढ़नी बनाना, चटाई बुनना, रस्सी बांटना, तकली पर कताई करना, चरखा चलाना आदि भी सीख लिए। आपने हाई स्कूल की शिक्षा अनुग्रह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (गेट स्कूल) औरंगाबाद से 1964 में पूरी की। 1962 में जब देश पर चीनी आक्रमण हुआ तब तत्कालीन औरंगाबाद के ए.एस.पी. के. डी. दुबे के निर्देशन में अन्य लोगों के साथ सिविल राइफल ट्रेनिंग भी ली थी।

आपने मनोविज्ञान विषय में प्रतिष्ठा के साथ स्नातक की डिग्री सच्चिदानंद सिन्हा कॉलेज, औरंगाबाद से 1967 में प्राप्त की। इस परीक्षा में आपने अपने विभाग में पूरे मगध विश्वविद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया था। महाविद्यालय में आप एनसीसी के भी छात्र रहे और 'बी' तथा 'सी' सर्टिफिकेट भी प्राप्त किए। एम.ए. एवं बी.एल. की डिग्री आपने 1969 में पटना विश्वविद्यालय से ली। उसके बाद बीएल की डिग्री ही समाप्त हो गई और शायद एल.एल.बी की व्यवस्था प्रारंभ हुई।

आपने 5 अक्टूबर 1970 को अपने सीनियर रमेश बाबू अधिवक्ता के निर्देशन में वकालत का श्रीगणेश किया। आपको वकालत करते हुए 4 या 5 वर्ष ही हुए थे कि आपको एक कठिन केस में मुदालय की ओर से वकालत करनी पड़ी। उस केस में किसी असह्य घटना पर एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति की हत्या कर दी थी और फिर स्वयं जाकर पुलिस को इस बात की जानकारी दी थी और खून लगे वस्त्र तथा भाला भी समर्पित किए थे। आपने सडेन प्रावोकेशन केश बनाकर मुकदमा लड़ना प्रारंभ किया और अंत में बाला बाबू नामक अधिवक्ता के बताए गए बिंदुओं को ध्यान में रखकर मुदालय द्वारा पुलिस को दी गई जानकारी को एफ.आई.आर. न बनाने का आधार बनाकर मुकदमा जीत लिया था। आपने वकालत के दौरान एक घटना से यह शिक्षा ग्रहण की कि अपने सीनियर के साथ ही आगे बढ़ना चाहिए। ऐसा इसलिए कि आपने अपने सीनियर को बताए बिना अपनी फी की लेकर पिटीशन मूव कर दिया था। सीनियर द्वारा पूछे जाने पर आपने उन्हें कह दिया कि आपने उनका भी फी ले लिया है और तब आपको अपने 10 रु. लगाकर उन्हें 15 रु देने पड़े थे।

सफल अधिवक्ता के नाम से तो आप जाने ही जाते हैं। पर अब का युवा वर्ग आपको अधिवक्ता कम तथा सीतयोग इंजीनियरिंग कॉलेज के मालिक या चेयरमैन के रूप में अधिक जानता है। जब आज मैंने एक युवक को आपके डेरे तक पहुंचाने को कहा और लोकेशन बतलाया तो उसने

कहा कि वह वकील साहब का नहीं, सीतयोग इंजीनियरिंग कॉलेज के मालिक का घर है। औरंगाबाद जिला को दिया गया यह उपहार जहां एक ओर औरंगाबादवासियों को दीर्घकाल तक लाभान्वित करता रहेगा, वहीं आपकी कीर्तिपताका भी दीर्घकाल तक फहराती रहेगी। आपका नाम औरंगाबाद जिले के इतिहास में अमिट छाप छोड़ जाएगा।

इंजीनियरिंग कॉलेज के संबंध में जब आपने जानकारी साझा की तो मैं अचंभित रह गया। यह जानकारी युवा वर्ग के लिए और आनेवाली पीढियों के लिए मार्गदर्शन करती रहेगी। आपके सुपुत्र डॉ. राजेश कुमार सिंह, जो वर्तमान में सीतयोग इंजीनियरिंग कॉलेज के सचिव भी हैं, 2009 में पक्षाघात से ग्रसित हो गए थे। वे एक इंजीनियर हैं और उन दिनों भी वे नौकरी के साथ कंपनी चलाने का कार्य भी मुंबई में रहकर किया करते थे। जब वे काफी उपचार के बाद स्वस्थ हुए तब उन्होंने अपने पिता अर्थात् कुमार योगेंद्र नारायण सिंह अधिवक्ता से प्रस्ताव रखा कि उन्होंने अपने अध्ययनकाल में ही प्रण किया था कि बिहारी छात्रों के लिए औरंगाबाद में एक इंजीनियरिंग कॉलेज अवश्य स्थापित करेंगे। अपने सुपुत्र के इस प्रस्ताव को सुनकर कुमार आप सन्न रह गए। आपने इस योजना को धरती पर उतारने का कोई उपाय नहीं देखते हुये इसका विरोध किया। परंतु, जब राजेश जी ने आपसे निवेदन किया कि माननीय पंडित मदन मोहन मालवीय जी के पिताजी तो वकील नहीं थे। फिर भी उन्होंने काशी विश्वविद्यालय की स्थापना कर दी थी तो मेरे पिता के पास तो बहुत कुछ है। उनके इस तर्क को सुनकर आप सहमत हो गए।

जब भवन बनाने और अन्य कानूनी प्रक्रिया प्रारंभ करने की बात आई तब अन्य समस्याओं की तरह पैसे की समस्या होना लाजमी था। आप के सुपुत्र इसे बैंक से कर्ज लेकर करना चाहते थे और आप अपने पिता जी की उन बातों को याद कर कर्ज लेने से मना कर देते थे कि भूखे रहना अच्छा है, कर्ज में रहना अच्छा नहीं। इस तथ्य का निराकरण करते हुए भी राजेश जी ने आपको बताया कि इन दिनों कोई भी बड़ा कार्य बैंक से कर्ज लिए बिना नहीं किए जा सकता है। फलतः आपने भी हामी भर दी। भवन–निर्माण के लिए भूमि पूजन का कार्य 2010 में प्रारंभ किया गया और पूजन के साथ ही निर्माण कार्य भी शुरू कर दिया गया। लगभग एक वर्ष के समय के बाद 13 सितंबर 2011 से सीतयोग इंजीनियरिंग कॉलेज ने काम करना प्रारंभ कर दिया। विभाग में ऊपरी स्तर पर और न्यायालय में वैधानिक स्तर पर इसे स्वीकृति प्रदान कराने और एआईसीटीई से भी अनुमति प्राप्त कराने में माननीय निखिल बाबू, राजेंद्र बाबू अधिवक्ता और अभय बाबू अधिवक्ता ने पूर्ण सहयोग दिया। आज संस्था की स्थिति बहुत अच्छी है। इसका परीक्षा फल और कैंपस सेलेक्शन प्रशंसनीय रह रहा है।

इन दिनों जितनी भी ऑनलाइन परीक्षाएं हो रही हैं लगभग सभी का एक केंद्र सीतयोग इंजीनियरिंग कॉलेज भी रहता है ।

आपने न केवल इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया बल्कि सच्चिदानंद सिन्हा कॉलेज, औरंगाबाद में भी व्यावसायिक शिक्षा की पढ़ाई के लिए सहयोग और समर्थन दिया। इस कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए माननीय निखिल बाबू ने जिन तीन लोगों की समिति बनाई थी उसमें तत्कालीन प्राचार्य अर्जुन सिंह, स्वयं आप और जम्होर के मुन्ना बाबू थे। निश्चित रूप से आप लोगों का प्रस्ताव मिलने के बाद ही कॉलेज में व्यवसायिक शिक्षा प्रारंभ हुई।

आप सामाजिक जीवन में भी विशेष रुचि रखते हैं। सभी लोग आपको अपना मानते हैं। आप भी सबको अपना ही समझते हैं। चाहे किसी भी वर्ग और किसी भी आर्थिक स्थिति का व्यक्ति क्यों न हो, जब वह अपने यहां के पारिवारिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का आपसे आग्रह करता है तो आप उसे न केवल स्वीकार करते हैं,परंतु वहां अल्प काल के लिए भी अपनी उपस्थिति अवश्य दर्ज करा देते हैं। इसमें आपको कई बार अनेक दिक्कतों का भी सामना करना पड़ता है। आप स्वस्थ, सुखी और दीर्घायु रहें। आपको सादर प्रणाम।

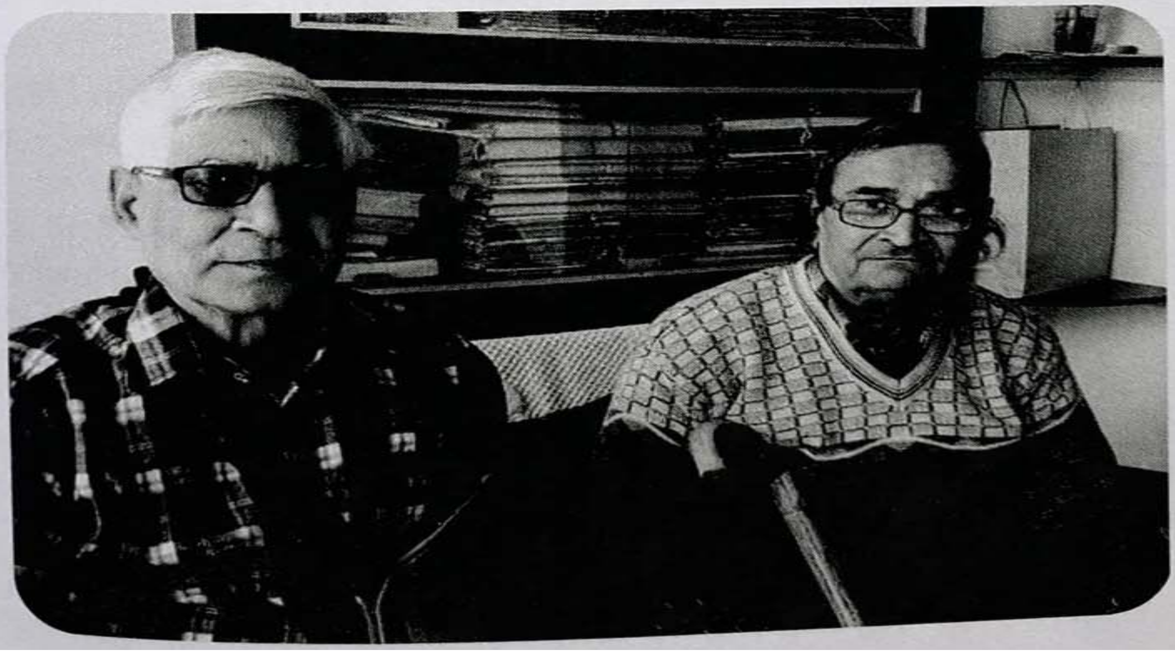

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं मानव- मूल्य

शिव नारायण सिंह
अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक

शिक्षा वह सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से पूर्ण मानव बनने का अवसर प्राप्त होता है। मां के आंचल से प्रारंभ होकर, पिता की उंगली के सहारे , शिक्षण संस्थाओं में पहुंच कर गुरुजनों के माध्यम से इस प्रक्रिया को मुख्य रूप से पूरा किया जाता है ।प्राचीन आश्रम व्यवस्था में 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था थी ।आज भी प्रारंभ के 25 वर्ष की आयु तक ही शिक्षा ग्रहण करने की उपयुक्त अवधि मानी गई है। विद्वानों का ऐसा मानना है कि इस आयु तक स्मरण शक्ति की गति अत्यंत तीव्र होती है और इसमें दृढ़ता भी अधिक रहती है।

आज शिक्षा गुरुकुल परंपरा से मुक्त हो गई है और बड़ी-बड़ी शिक्षण संस्थानों की शरण में चली गई है । भारतवर्ष में भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस क्षेत्र में असाधारण प्रगति हुई है। भारत ने ज्ञान - विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, उद्योग- धंधे ,संचार व्यवस्था, यातायात, चिकित्सा और ज्ञान- विज्ञान तथा अनुसंधान के क्षेत्र में अत्यंत तरक्की की है।

शिक्षा जगत में ज्ञान के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति हो तो हुई है ,परंतु पहले की अपेक्षा शिक्षा व्यवस्था में मानवीय मूल्यों को स्थान देने का कोई विशेष प्रावधान नहीं रखा गया है। हम भौतिकता के क्षेत्र से संबंधित बातों को सीख कर भौतिक जगत में बहुत आगे बढ़ रहे हैं। परंतु ,हम अपने पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों को धीरे धीरे भूलते ही जा रहे हैं ।

पहले प्रारंभिक स्तर पर अर्थात प्राथमिक से उच्च विद्यालय तक हिन्दी साहित्य में तुलसी,सूर, मीरा, रहीम कबीर, रैदास आदि की रचनाओं को समाहित कर बच्चों के मानस पटल पर नैतिकता का बीज बो दिया जाता था। परंतु आज के पाठ्यक्रमों में ऐसे लोगों की रचनाओं को स्थान ही नहीं दिया जा रहा है। इस स्थिति में हम कैसे सीख सकते हैं कि

“रहिमन प्रीत न कीजिए जस खीरा ने कीन।

ऊपर से तो दिल मिले भीतर फान्के तीन ।। ”

और

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

इसी प्रकार हम अपने घर में माता -पिता- गुरु का आदर भाव भी इन बातों को सीखे बिना कैसे कर सकते हैं कि

"प्रात काल उठ के रघुनाथा।

मात पिता गुरु नावहिं माथा।।"

अपने शिक्षकों और गुरुजनों के प्रति सम्मान- भाव की शिक्षा हम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब यह जान लें

“श्री गुरु पद नख मनी गण जोति ।

सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।।”

आज हम उद्भट विद्वान बनते जा रहे हैं। भौतिक जीवन से संबंधित सभी क्षेत्रों में ज्ञान का भंडार प्राप्त करते चले जा रहे हैं। परंतु मानवीय मूल्यों की ओर ध्यान दिलाने का काम आज की शिक्षा व्यवस्था में न के बराबर ही किया जा रहा है।

आज की शिक्षा व्यवस्था मैं सबसे पहले भारत की परंपरागत समृद्ध संयुक्त परिवार की व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया ।आज के पढ़े-लिखे युवा रोजी-रोटी की तलाश में घर से दूर होते चले जा रहे हैं और एकाकी परिवार में अपना जीवन व्यतीत करने को बाध्य से हो गए हैं। इस बाध्यता के कारण अब तक माता- पिता के महत्व को नहीं समझ पाने के कारण बुढ़ापे में उनकी सेवा के बारे में सोचने तक का समय भी नहीं पा रहे हैं ।परिणामतः घर समाप्त होते जा रहे हैं और वृद्ध आश्रम बढ़ते चले जा रहे हैं।

आपसी सौहार्द ,भाईचारे और प्रेम की सीख भी बच्चों को नहीं दी जा रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि पढ़ने- लिखने के बाद भी व्यक्ति स्वार्थी ,चाटुकार, अवसरवादी और हिंसक प्रवृत्ति का होता चला जा रहा है। अब तो समाज और पड़ोस को कौन कहे परिवार में ही प्रेम का लगभग अभाव सा हो गया है।

शिक्षा का मूल आधार चरित्र निर्माण होना चाहिए। परंतु शिक्षण व्यवस्था में नैतिकता की पढ़ाई के अभाव हो जाने के कारण चरित्र निर्माण की प्रक्रिया लगभग ठप्प सी हो गई है। एक समय था जब यह कहा जाता था कि "संपत्ति लूट जाए तो कोई हानि नहीं होती, स्वास्थ्य लूट जाए तो कुछ हानि होती है, लेकिन चरित्र लूट जाए तो सब कुछ लूट जाता है।" हम दैनिक जीवन में देख सकते हैं कि बड़े-बड़े पदों पर आसीन विद्वान व्यक्ति भी भ्रष्टाचार और दोहन करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करता है।

आज की शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम निर्माण कर्ताओं और शिक्षा - व्यवस्था की संपूर्ण प्रक्रिया को संचालित करने वाले लोगों को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि जहां हम भौतिकता की दौड़ में आगे रहें, वहीं पारंपरिक आदर्शों और नैतिकता, सामाजिकता,राष्ट्रीयता जैसी भावनाओं का विकास भी शिक्षा ग्रहण करने वालों में हो सके। चरित्र निर्माण और नैतिकता की स्थापना शिक्षा का आधार होना चाहिए।

निष्कर्ष्तः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति को संपूर्ण मानव के रूप में तैयार कर देने का उद्देश्य ही शिक्षा व्यवस्था का होना चाहिए।

अपने “मैं” को पहचानिये

डॉ. एस.के.झा
कम्प्युटर साइन्स संकाय

विश्व की वर्त्मान परिस्थिति एक अवधारणा की ओर सकेत करती है जो “मैं” मैं समाहित होती है। “मैं” शब्द अपने मैं अनेक भावों को अंतर्निहित करता है। मनुस्य की प्रकृति,स्वभाव और उसके मस्तिस्क के चिंतन को एकीकृत कर उसके अनुरूप उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। “मैं” शब्द तुलनात्मक दृष्टि से सकारत्मकता से थोड़ा बिलग नकारत्मकता को प्रबल करता है।मनुष्य के जन्म से मृत्युपर्यंत “मैं” एक जीवन शैली बनकर समाहित रहती है। उसके जीवन शैली मैं “मैं” एक दर्प को प्रदर्शित ही नहीं करता अपितु उसके सभी कार्यकलाप उससे प्रभावित होते हैं।यह दर्प यानि जो “मैं” है ,वह व्यक्ति को एक अपना नजरिया देता है। यह “मैं” बचपन से ही विकसित होता है और हर तरह के निजी पसंद – नापसंद , अच्छी बुरी यादों व लगातार बढ़ती इछाओं को एकट्ठा करता रहता है। यह संग्रह कोई ऐसा बोझ नहीं होता ,जिसे आप जीवन भर ढोते चलते हैं अपितु यह एक कहानी मे तब्दील हो जाता है।

यहीं पर गहरे आध्यात्मिक सवाल खड़े होते हैं। क्या मनुष्य को वाकई एक कहानी की दरकार है ? कहानी क्या लाभ पहुंचा रही है या रोक रही है ? भले आपके “मैं” को आपकी दैनिक घटनावों के मार्गदर्शन के लिए इसकी जरूरत महसूस होती हो , पर यह कहानी वास्तव मे जीवन मे कुछ नुकसान ही देती है।

यह मनुष्य को व्यक्तिगत स्वयं के लिए सोचने को मजबूर करती है। व्यक्ति की यह कहानी एक एजेंडे की उपज है जिसे मनुष्य बचपन से ही नकारत्मकता की भूमि पर अहंकार की बूंदों से सींच रहा है और फलतः यह “मैं” स्वार्थ और दर्प मे समायोजित होकर व्यक्ति को एक निर्णायक मोड़ पर खडा कर देता है। जब तक मनुष्य इस एजेंडे को बनाए रखता है और स्वीकृत मापदंडो मे घुल मिल जाते हैं , तब तक आपका अहंकार सुरक्षित महसूस करता है अन्यथा अलग थलग “मैं” मदद नहीं कर सकता , अपितु असुरक्षित हो सकता है।

विश्व के प्राचीन इतिहास के पटल पर वर्णित अनेक घटनाएँ एवं व्यक्ति विशेष जैसे अलेक्जेंडर ,मुसोलिनी ,नेपोलियन से लेकर वर्तमान के पुतिन और जेलसिंकी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं जिसके “मैं” ने मानव जाति को बिभीषिका की त्रासदी मे झोंक डाला।

जरा इन कथनो पर बिचार कीजिये जो लगभग सभी की कहानी के मूल मे होते है। आप अनुकूलता के सूचकांक मे कहाँ फिट होते है ? हमारा समाज हमे और अमूमन चीजों को किस रूप मे देखता है ? जबतक व्यक्ति व्यावहारिक लक्ष्यों और परिणामो को “मैं” शब्द से बिलग होकर नहीं सोचता तब तक निश्चित रूप से जीवन अत्यंत सीमित होगा।

“मानसयेनकन , बचस्येकन ,कर्मस्येकन महातमनः “ को जीवन का पर्याय बनाना , “मैं” के दुष्प्रभावों से चरित्र को ब्ंचित करना है और “ मनसा वाचा कर्मणा “ की ओर प्रेरित होना है।

अन्तः “मैं” एक अवधारणा है ,मन निर्मित है। आप कौन है , इसकी हकीकत उस कहानी से अलग है जिसे आप जी रहे हैं ,जिस “मैं” को आप अपनी पहचान के रूप मे चिपकाए है।

(प्रदूषणमुक्त वातावरण हमारा)

विकास कुमार

सहायक प्रोफेसर, विभाग-BBA

आशा की अब किरण जागी है...
इन अँधेरी रहो में....
हर्ष और उलास देखो आज....
गूंजती है हर गलियों के चौराहों में....
मीठे स्वर गूंज रहे है...
पंक्षी के बोल यहाँ पर...
असीम-सुख-शांति सब मिलती...
सायद स्वर्ग सा है भूगोल यहाँ पर..
फूलो की खुशबू चिड़ियों की चहक देखो...
मेहक रही है बागों में...
आज अप्सराये भी धरती पर..
दिखती है खुले आसमानों के ख्वाबो में...
स्वर्ण सूर्य - और -स्वर्ण प्रभा में..
देखो कितनी लाली है..
आज चमकती है धरती..
जैसे रोज दिवाली है...
आज प्रकृति की हर पहलू पर..
दिखती बस अब प्रभु की माया है..
मृदुल ध्वनि पड़ती कानो पर..
जैसे कृष्णा की छाया है....
आज परस्पर - तत्पर होकर...
प्रकृति को हम बचाएंगे...
ईश्वर की असीम अनुकंपा को...
ना नुक्सान हम पहुचायेंगे...
आज सितयोग का बच्चा - बच्चा...
ये संकल्प दोहराएंगे ....
प्रकृति और जन-जीवन के खातिर...
वृक्ष हम लगाएंगे....
पर्यावरण बचाएंगे....
वृक्ष हम लगाएंगे.....

Digital Privacy - A Myth

(डिजिटल प्राइवेसी - एक रहस्य)

By

Ranjeet Kumar Pandey
Department- C.S.E

गोपनीयता की परिभाषा सैद्धांतिक रूप से सीधी है, लेकिन वास्तविकता में अधिक जटिल है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर प्रगति ने हमारे ऑनलाइन अनुभव को काफी बदल दिया है। आज, हम न केवल शोध करने और काम करने के लिए, बल्कि खरीदारी करने, तलाशने, कनेक्ट करने और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए ऑनलाइन जाते हैं। इस प्रक्रिया में, हम बड़ी मात्रा में डेटा साझा करते हैं - डेटा जिसमें अंतर्दृष्टि होती है कि हम कौन हैं और हम कैसे रहते हैं।

एक आम मिथक यह है कि गोपनीयता कठिन है। वास्तव में, आदर्श परिस्थितियों में भी पूरी तरह से 'निजी' प्रणालियों को डिजाइन करना असंभव है। लेकिन हमें परफेक्ट को अच्छाई का दुश्मन नहीं बनने देना चाहिए। थोड़ा सा प्रयास और विचार वास्तव में बहुत सारी गोपनीयता को नुकसान से बचा सकता है। वास्तव में, जिस तरह तकनीक का उपयोग हमारी गोपनीयता पर आक्रमण करने के लिए किया जा सकता है, उसी तरह इसका उपयोग डिज़ाइन द्वारा गोपनीयता को लागू करके हमारी गोपनीयता की रक्षा के लिए भी किया जा सकता है।

हम तेजी से बढ़ती डिजिटल दुनिया में रहते हैं। हम ऑनलाइन खरीदारी करते हैं और अपने जीवन को डिजिटल रूप से साझा करते हैं। सरकारें अपने कार्यों को अधिक कुशलता से करने, हमारी सुरक्षा और सुरक्षा बढ़ाने और धोखाधड़ी से निपटने के लिए डिजिटल होती हैं। व्यवसाय समान रूप से नई प्रणालियों और सेवाओं के लिए डिजिटल तकनीकों को अपनाते हैं जो अधिक कुशल और अधिक व्यक्तिगत हैं।ये सभी प्रणालियाँ बड़ी मात्रा में व्यक्तिगत डेटा एकत्र करती हैं और उस जानकारी का उपयोग हम पर नज़र रखने या प्रभावित करने के लिए करती हैं, हममें से कई लोगों को इसके बारे में पूरी जानकारी नहीं होती है। सामान्य मिथक हमारी दृष्टि को परेशान करते हैं और हमें उदासीनता में डाल देते हैं। अब समय आ गया है कि हम जागें, इन मिथकों को चुनौती दें, खराब तरीके से डिजाइन किए गए सिस्टम को पहचानना सीखें और उन्हें अधिक गोपनीयता के अनुकूल सिस्टमों से बदलें।

सबसे जरूरी इन बातों को हमेशा याद रखें :-

- **आज की दुनिया में गोपनीयता 100% एक मिथक है।**
  आपकी बातचीत खुली हवा में यात्रा करती है। कुछ एन्क्रिप्टेड होते हैं और कुछ नहीं। ऐसा वास्तव में लंबे समय से हो रहा है। आप कहीं भी जो कुछ भी कहते हैं उसे एकत्र किया जा सकता है, और आपकी गतिविधि को ट्रैक करने, उसका पीछा करने, चोरी करने और उसकी निगरानी करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- **आपका ईमेल एक सुरक्षित जगह नहीं है**

Google कर्मचारी वायरस को हटाने, या संभावित रूप से असुरक्षित या हिंसक ईमेल को हटाने के लिए उपयोगकर्ताओं के ईमेल तक पहुंच सकते हैं और कर सकते हैं। यह एक ऐसा स्थान है जहां आपको ऐसा लगता है कि आप अपने जीवन की कुछ सबसे निजी बातचीत कर सकते हैं। जब आप अपना खाता बनाते हैं तो उन्हें केवल आपके लिए अनुबंध खंड पर हस्ताक्षर करने की आवश्यकता होती है। मैं लगभग गारंटी दूंगा कि अन्य सभी ईमेल विक्रेता उसी तरह हैं।

❖ **आपका GPS आपको ट्रैक कर रहा है...हमेशा**

इसे घर पर आजमाएं। गूगल मैप्स खोलें, डेस्टिनेशन चुनें और गो दबाएं। फिर उस ऐप को बंद किए बिना ही अपने फोन को एयरप्लेन मोड में डाल दें।अब अपने गंतव्य की ओर बढ़ें और देखें कि आपका नीला बिंदु आपके साथ चलता रहता है। जब आप अपने फोन को एयरप्लेन मोड पर रखते हैं तो जीपीएस संचार आमतौर पर बंद नहीं होता है।

❖ **आपका ब्राउज़िंग हिस्ट्री साफ़ नहीं किया जा सकता**

आपका ब्राउज़िंग इतिहास आपकी पहचान से जुड़ा हुआ है और लगभग कभी भी निजी नहीं होता, तब भी जब आप इन्कॉग्निटो (गुप्त) हो गए हों। आप इंस्टॉल किए गए एप्लिकेशन और ऑपरेटिंग सिस्टम के बारे में डेटा खींच सकते हैं, और यदि आपका नाम आपकी मशीन या इंस्टॉल किए गए एप्लिकेशन से जुड़ा है, तो यह अक्सर रजिस्ट्रेंट पहचान को स्टोर कर सकता है। इसका मतलब है कि एक अश्लील साइट आपका पहला और अंतिम नाम, उपयोगकर्ता नाम, संग्रहीत कुकीज़ इत्यादि खींच सकती है। ऐसा अक्सर तब होता है जब सक्रिय आक्रामक खुफिया संचालन के लिए टारगेट किया जाता है।

❖ **आपके डिवाइस आपको धोखा दे रहे हैं**

क्या आपने कभी अपने फोन पर 'किसी चीज' के बारे में बातचीत की है, फिर बाद में फेसबुक या इंस्टाग्राम पर उसी 'चीज' के लिए एक विज्ञापन देखा है? क्या आपने कभी अपने Google होम या एलेक्सा के आस-पास एक बैंड का नाम कहा हो और फिर सुना कि Google Play Music पर अगला बैंड वही है? यह कोई संयोग नहीं है? इस प्रकार की जानकारी एकत्र, एकत्रित और साझा की जा सकती है।

जब आप ऑनलाइन होते हैं, तो आपकी कोई गोपनीयता नहीं होती है। जब आप डिवाइस के आसपास होते हैं, तो आपके पास कोई गोपनीयता नहीं होती है।

बिन द्वारपाल जनसंचार

राजेंद्र कुमार पाठक
विभागाध्यक्ष,पत्रकारिता-जनसंचार विभाग,SIT

(इतिहास में गेटकीपिंग -- 1950 में, बोस्टन विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के प्रोफेसर डेविड मैनिंग व्हाइट ने उन कारकों पर ध्यान दिया, जो एक संपादक यह तय करते समय ध्यान में रखता है कि कौन सी खबर अखबार बनाएगी और कौन सी खबर नहीं।)

आज जनसंचार और पत्रकारिता की गति और मति पर सहज सवाल उठ रहे हैं वह है बिन द्वारपाल जनसंचार को लेकर।

मॉस कंम्यूनिकेशन में 'गेटकीपरों और गेटकीपिंग ' के मामले बड़े दिलचस्प हैं। गेटकीपर्स, मास कम्यूनिकेशन के वारियर्स होते हैं।

समस्त जनसंचार अथवा पत्रकारिता की दुनिया की द्वारपाल व्यवस्था इस सोशल मीडिया के युग में हाथों हाथ आ गई सी लगती है ? अब "न गेटपास लेना न गेटकीपर्स का मौजूद होना" जैसे हालात सामने हैं।

हर कोई खबरची और हरकोई की अभिव्यक्ति के दौर में गेटकीपर्स की व्यवस्था और पहचान का संकट है न ? अब आप ही लेखक आप ही सम्पादक से वातावरण नहीं हैं क्या ?

इसका लाभ कौन ले रहा है या फिर कौन-कौन नहीं ले रहा है ?

अभी तो पत्रकारिता जगत में "सपनों का कोई सम्पादक आयेगा ऐसे स्वप्न देखे ही जा रहे थे" कि अब सम्पादक-द्वारपाल जैसी व्यवस्था का एक बड़ा और बुनियादी विस्तार कर दिया इस सोशल मीडिया ने।

आप सोशल मीडिया प्रोवाइडर्स की व्यवस्था को गेटकीपिंग या कीपर्स के रुप में पाते तो हैं पर सूचना के प्रकाशन के बाद और उसके प्रसारण के बाद क्यूंकि चयन की व्यवस्था को ध्वस्त करके आपत्तियों को आमन्त्रित करने की व्यवस्था हावी हो चुकी है।

कुछ लोग इसे आजादी कहते हैं तो कुछ बर्बादी। पूरी आबादी में इसपर एकमुश्त मान्यता का सवाल ही नहीं ?

महज कुछ सालों में संस्थागत पत्रकारिता की दादागिरी खतम हो चुकी है अब बारी है उनकी कारपोरेट एडवरटाइजमेन्ट, सरकारी विज्ञापन, और राजनीतिक धनागम में बंटवारे की। इस आमदनी का खुदरा बाजार भी 'हर कोई ख़बरची 'मंडली ने कब्जियाना शुरु कर दिया है और लीला आगे लंबी होनी है।

हर कोई ख़बरची फार्मूले की पत्रकारिता को कोसनेवाले कोसते तो जा रहे हैं पर उसका ग्रोथ तो बढ़ता ही जा रहा है। खबर परोसने की दरकार भी नही,खबर खुद वायरल होती जाती है। संगठित मीडिया घराने के लोग "हरकोई ख़बरची" वालों पर नजर रखे-रखे मोतियाबिंद के शिकार फिर चश्मा का मोटा प्रकार,फिर आपस मे ही गाली गलौज और मोटी होती चमड़ी के हाल के लती हो चुके हैं, वैचारिक और शारीरिक रुप से। सम्पादकों की ठसक अब उनकी अपानवायु की ठस में तब्दील हो चुकी है।

नेता भी अब 'हरकोई ख़बरची' स्टाइल से काम चला रहे हैं पार्टीया भी इसी राह पर हैं अपराध की खबर देने वाले अपराधी हों या समाज को सुधारने वाले सुधारक सब हर कोई ख़बरची स्टाइल का दीवाना है। एक बड़ी कारपोरेट कम्पनी और एक बड़ी पॉलिटिकल पार्टी कई संस्थागत मीडिया घरानों के कुत्सित निर्देशन कार्य में हैं ये देश का ओपन सीक्रेट है।

तब 'हरकोई ख़बरची' वाले कल्चर का दीवाना अब हर जगह के विपक्षी दल भी हैं। गज्जब ?

बिलबिलाए संगठित और संस्थागत मीडिया के पक्षधर, हर कोई ख़बरची वाली खबरों की प्रस्तुति पर सवाल दागते फिरते हैं.. क्यों ? क्योंकि, ख़बर चयन का एकमुश्त अधिकार उनके हाथ से चला गया है।

रही बात गलती होने की तो फ्रीडम ऑफ स्पीच के आगे पीछे के कानून के अलावा इस दुनिया मे है ही क्या ? उसका इस्तेमाल भी जस्टिस के लिए खूब हो रहा है पर संस्थागत मीडिया के लोग हर कोई ख़बरची वाले स्टाइल से 'सटक सीताराम" तो हो ही गए हैं क्योंकि अब खबरें तो वायरल दुनिया की चीज हो गई हैं और "आया राम, गया राम, फिर हाय राम" कहते पगलाये संस्थागत मीडिया के लोग कई तरह के घूंट पीकर हर दिन रहने को मजबूर हैं या अपने निर्धारित भजन- कीर्तन-गुणगान कार्यक्रम को अंजाम देने को लाचार ?

पत्रकारिता में जब खबर प्रधान हो,सूचना प्रधान हो,अभिव्यक्ति प्रधान हो और सबतक पहुंचने का माध्यम हर के पास ही हो तो हरकोई ख़बरची स्टाइल में क्यों नही हो ?

ये आज जनसंचार की दुनिया का यक्ष प्रश्न है और जनसंचार के द्वारपाल व्यवस्था अथवा परम्परा की सबसे बड़ी चुनौती है।

सीतयोग शिवमंदिर: यहां रम ही जाते हैं सब

विपिन मिश्र, पुजारी, सीतयोग शिवमंदिर

सीतयोग इंजीनियरिंग/ पॉलिटेक्निक एवं आईटीआई संस्थान बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले के जसोईया मोड के पास स्थित एक प्रतिष्ठित संस्थान है ।
यह संस्थान हर तरफ से सुसज्जित है और इस संस्थान के अंदर के बाग बगीचे एवं फूल फल के वृक्ष पौधे नाना प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षियों के बीच संस्थान के अंदर एक रमणीक शिवालय प्रतिष्ठित है। शिवालय से यह संस्थान शोभायमान है।

यह मंदिर बहुत ही सुंदर बना है और इसके समीप एक छोटा सा सरोवर भी है जो कि इस मंदिर और संस्थान की सुंदरता को और बढ़ा देता है। यहां जो भी लोग आते हैं यहां का छोटा सा ही सही पर मौजूद मनोरम दृश्य देखकर मनमोहित हो जाते हैं, भाव विभोर हो जाते हैं। इस मंदिर का पट सुबह 5:00 बजे खुल जाता है। लोग प्रातःकाल से ही पूजन अर्चन वंदन के लिए आना प्रारंभ कर देते हैं। इस मंदिर में विद्यार्थी ,प्रोफेसर और भी अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी, कॉलेज के भीतरी एवं कॉलेज के बाहरी पदाधिकारी गणों का आना जाना बराबर लगा रहता है ।
प्रतिदिन यहां शाम 6:30 बजे संध्या आरती होती है। इस मंदिर में समय-समय पर विशेष पूजन अर्चन का भी कार्यक्रम होते रहता है जैसे महाशिवरात्रि में रुद्राभिषेक एवं कीर्तन नाग पंचमी का विशेष आयोजन। यहाँ २४ घंटे का अखंड एवं रुद्राभिषेक का कार्यक्रम भी अभी हाल ही में सम्पन्न हुआ है। इस मंदिर के आसपास का दृश्य मनमोहक है और जो कोई भी यहां भक्तगण आते हैं, वे बताते हैं कि इस मंदिर में आने के बाद शांति का अनुभव होता है और यहां से जाने की इच्छा ही नहीं होती।
हमारे संस्थान के सचिव डॉ राजेश कुमार सिंह जी के अनुसार यह स्थापित शिव मंदिर सीतयोग परिवार के आस्था का केंद्र है. इस शिव मंदिर के प्रति सीतयोग परिवार की श्रद्धा और समर्पण स्थापना के समय से लगातार प्रगाढ़ होता आया है।
सीतयोग के इस सुंदर शिवालय की स्थापना 2015 में समारोहपूर्वक अति उल्लासपूर्ण माहौल में की गई थी। शिव मंदिर की स्थापना के लिए संस्थान और इसके शुभचिंतकों ने एक राय बनाई थी। २०१५ की नागपंचमी को इस शिवालय का लोकार्पण हुआ और उस दिन मौजूद लोगों ने यहां एक नाग देवता के दर्शन भी किए .
सीतयोग परिवार और इसके परिसर को बाबा भोलेनाथ आशीर्वाद प्राप्त है तो बाबा भोलेनाथ को इस परिवार और परिसर का अनन्य प्रेम प्राप्त है।

संगीत

(अरविंद कुमार पाठक)

संगीत हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण और जीवनीशक्ति का प्रेरणादायक स्रोत है। संगीत पर प्रस्तुत है मेरी कविता...

संगीत ही शक्ति है,

संगीत ही भक्ति है।

संगीत दुनिया की श्रद्धा है ,

कभी युवती कभी वृद्धा है।

इससे ज्ञान संचार है ,

यह खुशियों का सार है,

इससे मनोरंजक संसार है।

इसमें पवित्रता का मार्ग है,

इसमें सबका सत्कार है।

जो इसे गुनगुनाते है,

जो इस पथ आते हैं

वे दौडते हैं ताल में,

सुर में ठहर जाते हैं ।

हमारी लाइब्रेरी

प्रस्तुति : अंशु कुमारी और प्रियंका कुमारी

सीतयोग इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी की लाइब्रेरी हमारे छात्रों के सबसे पसंद की जगह है। यहां हर दिन छात्र कम से कम ४० से ७० किताबें पढ़ते हैं जिनमे कुछ इश्यू होती हैं तो बाकी वे यहीं बैठकर पढ़ते हैं।

पुस्तकालय कक्ष में पठनीयता का काम और उसका स्तर काफी बेहतर है और छात्र या छात्राएं यहां एकल अथवा सामूहिक पठन अथवा विमर्श करते हैं। लाइब्रेरी में फ़िलहाल ११ हजार से अधिक किताबें हैं।

यहां से छात्र किताबें तो प्राप्त करते ही हैं जरुरी निर्देश भी हासिल करते हैं।

पुस्तकालय में वसन्तपंचमी को हरसाल सरस्वती पूजा आयोजित की जाती है।

लगभग साढ़े आठ हजार से अधिक किताबें फिलहाल अपनी लाइब्रेरी में हैं। लाइब्रेरी में बी-टेक कोर्स और डिप्लोमा कोर्स की तमाम किताबें तो हैं ही इसके अलावा प्लस टू और ग्रेजुएशन लेवल की मैथ,फीजिक्स,केमेस्ट्री के बुक्स भी हैं।

जर्नलिज्म और मॉस कॉम से जुड़ी किताबें भी लाइब्रेरी में आ चुकीं हैं जिसमें भारतीय जनसंचार और पत्रकारिता से जुड़ी पुस्तकें शामिल हैं।

इसके अलावा हिंदी और अंग्रेजी के लिटरेचर और ग्रामर की बुक्स भी यहां छात्रों के लिए उपलब्ध है। हिंदी और अंग्रेजी भाषा के उपन्यास और कथा संग्रह भी अपनी लाइब्रेरी में उपलब्ध हैं।

आनेवाले दिनों में आईटीआई और अमानत की किताबें भी आ जायेंगी जिनकी इसी सेशन से पढ़ाई शुरु होनेवाली है।

कर्म के पथ पर

Mrs.Bibha Krishna
Assistant Professor, C.S.E

अगर चलना है कर्म के पथ पर

तो त्याज से मत डरो तुम।

गलती से भी न घबरा

बार बार फिसल कर भी खरा हो तुम।

बाधाओं से निकल कर चट्टानों से लड़ कर

आगे को निकल तुम।

फिर देखो किस्मत क्या फूल खिलाती है

तुझको तेरी मंजिल से मिलवाती।

****

मजदूर

Mr.Shailendra Kumar
Assistant professor, E.E

थके मजदूर रह रह कर जुगात ऐसे लगाते है।

कभी खैनी बनाते है ,कभी बीरी लगाते है।

जहा नदियों का पानी छूने लायक भी नहीं लगता

हमारी आस्था है हम वही डुबकी लगाते है।

जरूरतमंद को कभी दो पल देना नही चाहा

भले हम मंदिर में लाइन लंबी लगाते है।

यहां पर कुर्सियां बकैयादा नीलम होती है।

चलो कुछ और बढ़ कर बोलिया हम भी लगाते है।

नही नफरत को फलने फूलने से रोकता कोई

यहां तो प्रेम पर ही सब पाबंदी लगाते है।।

टेक्नोलॉजी का दौर

Ruby Singh
Assistant Professor, C.S.E

टेक्नोलॉजी का दौर मुझे इस कदर भाया

मैं भी स्मार्ट टीवी और स्मार्ट फ़ोन ख़रीद लाया।।

अपने ही दोस्तों में बेगाना सा हो गया

मुझे क्या पता था कि मैं अपनों से दूर होने का सामान खरीद लाया।।

अपने बेटे के फ़ोन चलाने पर मैं मन ही मन मुस्कुराया

उस दिन पड़ा मुझे पछताना जिस दिन उसकी आँखों पर चश्मा चढ़वा के आया।।

टेक्नोलॉजी का दौर मुझे इस कदर भाया

मैं भी स्मार्ट टीवी और स्मार्ट फोन ख़रीद लाया।।

बच्चों के हेल्थ इशू को हमने आगे बढ़ाया

पहले वो पार्क में खेला करते थे फिर हमने उन्हें इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस से खेलना सिखाया।।

अपना महत्वपूर्ण समय मैंने व्हाट्सऐप फेसबुक और यूट्यूब पर बिताया

जिस पेपर में होना था पास मुझे उस पेपर में मै फेल होकर आया।।

टेक्नोलॉजी कर दौर मुझे इस कदर भाया।

मैं भी स्मार्ट टीवी और स्मार्ट फ़ोन खरीद लाया।।

लाल आँखें, सरदर्द और चिड़चिड़ापन को मैंने अपने पास बुलाया

कल मैंने पूरी रात फोन चलाया।।

टेक्नोलोजी का दौर मुझे इस कदर भाया

मैं भी स्मार्ट टीवी और स्मार्ट फोन खरीद लाया।।

Mohit Pandey
Roll No. - 21CSE22

"लिखते हैं दर्द"

जब मानवता और इंसानियत
शर्मसार होते हैं,
जब रिश्तों के डोर
तार-तार होते हैं
तब हम "लिखते हैं दर्द"।।

जब भरी बाजार में
चारों ओर चीख-पुकार होते हैं
जब चोरी और छिनैती से
भरे बाजार शर्मसार होते हैं
तब हम "लिखते हैं दर्द"।।

जब पवित्र सीता माता के
आचरण पर सवाल होते हैं
जब भरी सभा में भी
द्रौपदी के इज्जत तार-तार होते हैं
तब हम "लिखते हैं दर्द"।।

जब इंसान ही इंसान को
गिराने के फिराक में होते हैं
जब अपने ही अपनों को
दर्द देने में अपना उत्थान समझते हैं
तब हम "लिखते हैं दर्द"

मोहित पांडे

****

जिंदगी

Rajnandini Kumari
Roll No. - 21CSE41

जिंदगी कहने को आसां पर
घिरी है दुश्वारियों से
यहां बिन संघर्ष नहीं होता
कोई मुकाम हासिल
कोशिशें तमाम पर हासिल
हो जाती है नाकामयाबी लेकिन
लगातार मेहनत भी लाती है रंग
दिलाती है कामयाबी।
मिलता है मेहनत का फल
सबको जरुर
आपके सौ फीसदी मेहनत
का परिणाम शायद उतना न हो
पर जरुर निकल आता है
आपकी मेहनत का कोई अर्थ
जिंदगी कैसे कब कहां और
किस मुकाम तक की है सखि
आपको क्या पता ?
आप जिंदगी के साथ हैं
एक अनजाने रास्ते पर
जिसका मुकाम है ख़ास

****

<u>चेयरमैन सर की चेतावनी "ईहाँ पढ़े पडतऊ बबुआ"</u>

कुंदन कुमार

मेरा नाम कुंदन कुमार है। मैं बी टेक सीएसई 2019-23 बैच का छात्र हूं. मैं संस्थान के चेयरमैन सर की एक लाइन ..."ईहाँ पढ़े पडतऊ बबुआ" ..ये कभी नही भूल पाता।

क्योंकि जब 2019 में मैं यहां एडमिशन के लिए आया था तो एडमीशन ऑफिस में चेयरमैन सर से पहली मुलाकात हुई थी। मैंने उनसे यहां प्रवेश और पढ़ाई को लेकर कई बातें की तो उस दौरान उनकी एक खास चेतावनी और अपीलीय वाक्य से परिचित हुआ.... "ईहाँ पढ़े पडतऊ बबुआ"... उन्होंने साथ मे यह भी कहा था..."बबुआ,जान ले..सिलेबस बड़ी हाड़ हउ,जब हाड़ मेहनत करबे तबे जाके निमन रिजल्ट अतऊ,तबे प्लेसमेंट भी हो सकअ हउ"।

तबसे आजतक मैं उनकी इस गार्जियन लाइन ...को हमेशा याद करके यहां हर सेमेस्टर वाइज पढ़ाई करता आ रहा हूँ। आखिरकार एक विद्यार्थी को हरहाल में उसकी पढ़ाई और मेहनत ही तो काम आती है,चूंकि ये यूनिवर्सल ट्रूथ जो है।

मैं चेयरमैन सर की चेतावनी भरी इस अपीलीय लाइन को अपने संस्थान के जूनियर बैच को भी अक्सर सुनाता रहता हूँ कि..."ईहाँ पढ़े पडतऊ बबुआ" और हम सब पढ़ रहे होते हैं।

मन को बनाएं खास,खुशी और सहयोग में न करें संकोच

Sonam Kumari
Roll No. - 21EE013

हमे जिंदगी जिना इतना आसान नही है । जीवन में कई सारी परेशानिया आती रहती है, हमे इस परेशानियों को झेलकर आगे बढ़ना पडता है।

हमें कोशिश करनी है कि हम हमेशा दुःख में ना जियें कभी क्योंकि दुख में भी हम अगर खुश रहेंगे तो दुःख अपने आप दूर होती जाती है।

जैसे मंदिर में जिस भगवान की मूर्ति रहती है वहा कोई नकारात्मकता नही होती। तो हम क्यों ना कोशिश करें कि हमारे मन मंदिर में भी खुशी की मूर्ति वास करे ताकि दुःख हमारे पास आए ही नहीं।

एक बात और.. "दो तो तुम्हे भी दिया जाएगा" इस मान्यता पर मेरा कहना है कि हम किसी को जिस कटोरे से मापकर किसी को कुछ देते है तो हमे भी ऊपरवाले की ओर से उसी कटोरे से मापकर दिया जाएगा,कटोरे से हम किसी को आटा देते हैं तो कम ज्यादा हो जाता है उसी तरह।

किसी-किसी के पास खुशिया अधिक रहती हैं तो किसी के पास दुःख अधिक। इंसान कहता है कि दुःख हमारे पास ही क्यों अधिक आते हैं ? तो हमे पता रहना चाहिए कि जिस कटोरे से हम किसी को कुछ भी मापकर देते हैं तो भगवान भी हमे माप तौलकर ही न देगे ? इसीलिए हमे किसी को माप तौलकर या कुडकुडाकर बेमन से कुछ भी नहीं देना चाहिए,दान और सहयोग उन्मुक्त होना चाहिए खुले हाथ से होना चाहिए तभी तो ईश्वर भी हमे उसी तरह देंगे।

आगे बढ़ेंगे तभी

Akshay Kumar
Roll No. - 21CE021

हम छोटे हैं छोटे रहेंगे
तभी तो आगे बढ़ेंगे।
पापा के डांस और मम्मी के मां से हम राह चुनेगे,
दीदी और भैया के साथ खूब हम प्यार करेंगे,
छोटे हैं हम छोटे रहेंगे,
तभी तो आगे बढ़ेंगे।
पॉकेट मनी जब हुआ अधूरा ,
पापा भैया मां देवी मिलकर सब करेंगे पूरा,
तब जब हम उनके दिल में रहेंगे,
छोटे हैं हम छोटे रहेंगे,
तभी तो आगे बढ़ेंगे।
मां के उंगली पकड़कर धरती घूमेंगे,
पापा के कंधों से आसमां पकड़ेंगे,
दीदी से सेवा संस्कार दिखेंगे,
भैया से हम संस्कार जानेंगे ,
छोटे हैं हम छोटे रहेंगे,
तभी तो आगे बढ़ेंगे।
गुरु से हम ज्ञान लेंगे।
बड़े को सम्मान,छोटे को प्यार देंगे,
सब को एक समान करेंगे,
किसी से ना भेदभाव करेंगे,
हम छोटे हैं हम छोटे रहेंगे,
तभी तो आगे बढ़ेंगे।
सत्य के साथ गलत से दूरी,
ऐसा हम व्यवहार करेंगे,
बिगड़े ना कभी मेरा समाज,
ना कोई डर ना कोई गैर हो,
ऐसा हम सुविचार करेंगे,
छोटे हैं हम छोटे रहेंगे,
तभी तो आगे बढ़ेंगे।

ये है सीतयोग हमारा

Nirbhay Kumar
B.Tech Civil

मेरा नाम निर्भय कुमार है। घर गगनविहार टोला प्रखंड हसपुरा जिला औरंगाबाद का निवासी हूँ। मैं गांव से चलकर यहाँ अभियंता बनने आया हूँ और मैं बीटेक (सिविल)का छात्र हूँ।

जब मैं अपने कॉलेज में सीतयोग इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नालॉजी में अपना प्रवेश लेने आया था काफी उत्साहित था मैंने अपना नामांकन यहां करा लिया क्यूंकि यहां का वातावरण मुझे काफी अच्छा लगा।

सीतयोग परिसर औद्योगिक क्षेत्र के बीच एक शैक्षणिक परिसर है। बगल में सीमेंट प्लांट और साथ में ही इंजीनियरिंग कॉलेज के दोनों का आपस में लगे होना इंजिनियर बनने की कल्पना को उत्साहित करता है।

चारों ओर पेड़ पौधे से घिरा हमारा कॉलेज परिसर प्राकृतिक है। यहाँ शंकर भगवान जी का मंदिर भी है। इस कॉलेज में एक बड़ा खेल मैदान भी है जहाँ कॉलेज के छात्र छात्राओं के खेल आयोजन होते हैं. इस कॉलेज में कई सत्रों के बहुत छात्र छात्राएं और और तमाम शिक्षकगण यही छात्रावास में रहते हैं. इस कॉलेज छात्र और छात्रायें अलग अलग निवास करते हैं जबकि पढ़ाई साथ साथ।

छात्रावास के मेस में बेहतर खानपान की व्यस्व्था से हम चिंतामुक्त होकर पढ़ाई कर पाते हैं।

****

मां की दुनिया

Pnkaj Kumar
Roll No. - 21DME04

मां ऐसा क्यों होता है ?
दर्द मुझे पर दिल तेरा रोता है ।
एक खुशी के खातिर
तुम क्या-क्या ना करती हो
मेरे खाने की फिकर में
दिन भर भूखे तुम मरती हो।
मां ऐसा क्यों होता है ?
मेरे खाने से पेट तेरा भर जाता है ,
सर्दी बुखार या हो जुकाम
तेरा दिन रात एक हो जाता है।

पूरी रात मेरे सिरहाने

तब तेरा हो जाता है।

हां ऐसा क्यों होता है

जब नींद मुझे ना आए तो

चैन तेरा खो जाता है ?

ऐसा क्यों होता है ?

दर्द मुझे पर तेरा दिल क्यों रोता है

****

एसआईटी का आकर्षक प्ले ग्राउंड

Vivek Kumar
Roll No. - 21CE013

यहां पर एक बहुत बड़ा प्लेग्राउंड जिसमे फुटबॉल और क्रिकेट मैच होते हैं। कुछ छोटे छोटे बास्केटबॉल,वालीबॉल,टेनिस के भी यहां प्ले ग्राउंड है। यहां के बिल्डिंग काफी ऊँचे हैं जहां से खेल मैदान दिखता है।

कालेज में जब कोई बड़ा आयोजन होता है तो उसे खेल परिसर में ही मनाया जाता है । यहां एनुवल स्पोर्ट्स हरसाल जाड़े के दिनों में आयोजित होता है। खेल मैदान के होने से हमें विकास के अवसर मिलते हैं। हाल ही में कालेज में राष्ट्रीय खेल दिवस का भी आयोजन हुआ था। मुझे गर्व है कि मैं यहां का छात्र हूं।

अभियंत्रण शिक्षा : लक्ष्य के सफल संधान में हमारा संस्थान

Sushil Kumar
Roll No. – 20DEE113

हम सभी को अपने अपने घर परिवार में बराबर यह सुनने को मिलता है लक्ष्य हासिल करो। लक्ष्य मानव जीवन एक सबसे बड़ा उदेश्य और चुनौती भी है। लक्ष्य के प्रति हम सचेत रहते है तो खुश भी रहते है और अच्छा जीवन भी बिताया करते है। लक्ष्य प्राप्त करने के गर्व भी महसूस होता है। हमने अभी तक जो शिक्षा हासिल की है वो हमारा लक्ष्य रहा है और हमे प्राप्त हो गया है।

अब मै अपने अगले लक्ष्य की ओर हूँ। अब मेरा एकमात्र लक्ष्य है कि मै एक सफल इंजिनियर बनू। इसलिए मैंने सीतयोग प्रौद्योगिकी संस्थान में नामांकन करवाया है जहाँ से लक्ष्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो जाती है क्योकि यहाँ अच्छी पढ़ी होती है। मै अपने सिलेबस और क्लास दोनों को साधन बनाकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ रहा हूँ।

अंत में मै यह कहना चाहूँगा की जीवन में सब कुछ लक्ष्य ही तो है। धन हो दौलत हो या पद की प्राप्ति अथवा जीवन जीवन कोई उदेश्य पूरा हो जाना। फिलहाल मै एक सुयोग्य अभियंता बनने के लक्ष्य के साथ सीतयोग प्रौद्योगिकी संस्थान में अध्ययनरत हूँ